जनसत्ता, 9-2-19 p. 4

साहित्य अकादेमी में स्त्री स्वर पर बात

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 8 मार्च

साहित्य अकादेमी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन का आयोजन किया। मृदुला गर्ग ने कहा कि उत्तर स्त्रीवाद में मातृत्व को एक शक्ति की तरह पहचाना जा रहा है और यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है कि मातृत्व के रूप और रूपक में बड़ा बदलाव आया है। पुरुष के भीतर जब मातृ तत्त्व आ जाता है तब वह उत्पीड़क नहीं रहता बल्कि मित्र हो जाता है। सहजीवन और एक-दूसरे के साथ खड़े होना स्त्री लेखन और पुरुष लेखन में बढ़ रहा है। यह बहुत अच्छी स्थिति है और यह एक सहजीवी समाज और देश के लिए जरूरी भी है। सुकृता पॉल ने कहा कि स्त्रियों ने अपनी भाषा और अपना निजी स्वर स्वयं आविष्कृत किया है। यह यों ही नहीं है कि आज स्त्री रचनाकार सीरिया, ईराक और दुनिया के अनेक अस्थिर समाजों के मनुष्यों के बारे में गंभीरता से लिख रही है। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी स्त्री लेखन को बहुत आशा के साथ देख रही है और पर्याप्त सम्मान देने का प्रयास कर रही है।